



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 10, October 2023

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462

6381 907 438

ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

लुप्तप्राय प्रजातियां - एक भौगोलिक अध्ययन

DR. SATYA DEV

ASSOCIATE PROFESSOR, GEOGRAPHY, GOVT. COLLEGE, MALAKHERA, ALWAR, RAJASTHAN, INDIA

सार

लुप्तप्राय प्रजातियां, ऐसे जीवों की आबादी है, जिनके लुप्त होने का जोखिम है, क्योंकि वे या तो संख्या में कम हैं, या बदलते पर्यावरण या परभक्षण मानकों द्वारा संकट में हैं। साथ ही, यह वनों की कटाई के कारण भोजन और/या पानी की कमी को भी द्योतित कर सकता है। प्रकृति के संरक्षणार्थ अंतर्राष्ट्रीय संघ (IUCN) ने 2006 के दौरान मूल्यांकन किए गए प्रजातियों के नमूने के आधार पर, सभी जीवों के लिए लुप्तप्राय प्रजातियों की प्रतिशतता की गणना 40 प्रतिशत के रूप में की है।^[2] (ध्यान दें: IUCN अपने संक्षिप्त प्रयोजनों के लिए सभी प्रजातियों को वर्गीकृत करता है।) कई देशों में संरक्षण निर्भर प्रजातियों के रक्षणार्थ कानून बने हैं: उदाहरण के लिए, शिकार का निषेध, भूमि विकास या परिरक्षित स्थलों के निर्माण पर प्रतिबंध। विलुप्त होने की संभावना वाली कई प्रजातियों में से वास्तव में केवल कुछ ही इस सूची में दर्ज हो पाते हैं और कानूनी सुरक्षा प्राप्त करते हैं। कई प्रजातियां विलुप्त हो जाती हैं, या बिना सार्वजनिक उल्लेख के संभावित रूप से लुप्त हो जाती हैं।

परिचय

संरक्षण स्थिति

किसी प्रजाति के संरक्षण की स्थिति उन लुप्तप्राय प्रजातियों के जीवित न रहने की सूचक है। एक प्रजाति के संरक्षण की स्थिति का आकलन करते समय कई कारकों का ध्यान रखा जाता है; केवल बाक़ी संख्या ही नहीं, बल्कि समय के साथ-साथ उनकी आबादी में समग्र वृद्धि या कमी, प्रजनन सफलता की दर, ज्ञात जोखिम और ऐसे ही अन्य कारक। IUCN लाल सूची सर्वाधिक ज्ञात संरक्षण स्थिति सूचीकरण है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, 194 देशों ने लुप्तप्राय और अन्य जोखिम वाली प्रजातियों के संरक्षण के लिए जैव विविधता कार्य-योजना तैयार करने के लिए सहमति जताने वाले समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में इस योजना को आम तौर पर प्रजाति रिकवरी प्लान कहा जाता है।

लुप्तप्राय प्रजातियों की IUCN लाल सूची

संकटापन्न प्रजातियों की IUCN लाल सूची में जोखिम की एक विशिष्ट श्रेणी के तौर पर लुप्तप्राय प्रजातियां शब्द का प्रयोग किया जाता है। IUCN वर्ग और मानदंडों के अधीन लुप्तप्राय प्रजाति, गंभीर रूप से संकटग्रस्त और असुरक्षित के बीच में है। इसके अलावा, गंभीर रूप से संकटग्रस्त प्रजाति को लुप्तप्राय प्रजाति के रूप में भी गिन सकते हैं और सभी मानदंडों को भर सकते हैं।

विलोपन की जोखिम वाली प्रजातियों के लिए IUCN द्वारा प्रयुक्त अधिक सामान्य शब्द है संकटापन्न प्रजातियां, जिसमें लुप्तप्राय और गंभीर संकटग्रस्त सहित कम जोखिम वाली असुरक्षित प्रजातियों की श्रेणी भी सम्मिलित है। IUCN श्रेणियों में शामिल हैं:

- लुप्त : प्रजातियों का अंतिम शेष सदस्य मर चुका है, या यथोचित संदेह से परे यह माना जाता है कि मर चुका है। उदाहरण: थैलासाइन, डोडो, यात्री कबूतर, टाइरानोसॉरस, कैरेबियन मॉन्क सील
- जंगल में लुप्त : बंदी प्राणी जीवित रह सकते हैं, लेकिन कोई मुक्त, प्राकृतिक आबादी मौजूद नहीं है। उदाहरण: एलागोस कुरासो
- गंभीरतः संकटग्रस्त : निकट भविष्य में विलोपन के अत्यंत उच्च जोखिम का सामना कर रहे हैं। उदाहरण: अरकान वन कछुए, जावन राइनो, ब्राजील के मरगैनसर, घडियाल
- लुप्तप्राय : निकट भविष्य में विलुप्त होने की बहुत ही उच्च जोखिम का सामना कर रहे हैं। उदाहरण: नीला व्हेल, विशालकाय पांडा, बर्फीला तेंदुआ, अप्रीकी जंगली कुत्ता, शेर, एलबेटर्स, क्राउंड सालिटरी ईगल, ढोले, रंगस
- असुरक्षित : मध्यम दर्जे के विलोपन के उच्च जोखिम का सामना कर रहे हैं। उदाहरण: चीता, गौर, सिंह, आलसी भालू, वोल्वोराइन, मानाटी, ध्रुवीय भालू

- संरक्षण निर्भर : निम्नलिखित पशु को गंभीर खतरा नहीं है, लेकिन ये पशु संरक्षण कार्यक्रम पर निर्भर हैं। उदाहरण: चित्तीदार हैना, तेंदुआ शार्क, काला कैमान
- संकट के निकट : निकट भविष्य में इनके लिए खतरा हो सकता है। उदाहरण: ब्लू-बिल्ड डक, सॉलिटरी ईगल, स्माल-क्लाड औटर, मेन्ड वुल्फ़
- बहुत ही कम चिंताजनक : इन प्रजातियों के अस्तित्व के लिए कोई तात्कालिक खतरा नहीं है। उदाहरण: नूटका साइप्रेस, काठ कबूतर, हार्प सील[1,2,3]

संयुक्त राज्य अमेरिका

संयुक्त राज्य अमेरिका में लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम के अंतर्गत, दो श्रेणियों में "लुप्तप्राय" अधिक संरक्षित है। साल्ट क्रीक बाघ बीटल (सिसिन्डेला नेवाडिका लिकोलनियाना) ESA के तहत संरक्षित उप-प्रजाति का एक उदाहरण है।

अकेले संयुक्त राज्य अमेरिका में, "विलुप्त होने के खतरे वाली ज्ञात प्रजातियों की संख्या लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम के तहत संरक्षित संख्या से दस गुणा अधिक है" (विलकोव एंड मास्टर, 2008, पृ. 414)। अमेरिकी मछली और वन्य-जीव सेवा और साथ ही, राष्ट्रीय समुद्री मत्स्य सेवा को लुप्तप्राय प्रजातियों के वर्गीकरण और संरक्षण के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तथापि, सूची में किसी विशिष्ट प्रजाति को जोड़ना, काफी लंबी, विवादास्पद प्रक्रिया है और वास्तव में यह जोखिम वाले वनस्पति और प्राणी जीवन के केवल एक अंश का ही प्रतिनिधित्व करता है (विलकोव एंड मास्टर, 2008, पृ. 414)।

कुछ लुप्तप्राय प्रजातियों के कानून विवादास्पद रहे हैं। विवाद के विशिष्ट क्षेत्रों में शामिल हैं: लुप्तप्राय प्रजातियों की सूची में किसी प्रजाति को रखने के लिए मानदंड और उनकी आबादी की बरामदगी पर सूची में से किसी प्रजाति को हटाने के लिए मानदंड; भले ही भूमि विकास पर प्रतिबंध का मतलब सरकार द्वारा भूमि का "अधिग्रहण" हो; संबंधित सवाल है कि क्या निजी ज़मीन के मालिकों को उनकी भूमि के उपयोग के प्रति नुकसान के लिए मुआवजा दिया जाना चाहिए और संरक्षण कानूनों के प्रति समुचित अपवाद हासिल करना चाहिए या नहीं।

बुश प्रशासन के तहत, संघीय अधिकारियों द्वारा लुप्तप्राय प्रजातियों को नुकसान पहुंचाने वाली कार्रवाई से पूर्व, वन्य-जीव विशेषज्ञों से परामर्श लेने की पिछली नीति को हटा लिया गया। ओबामा प्रशासन के तहत, इस नीति को पुनः बहाल किया गया है।

लुप्तप्राय प्रजातियों के रूप में सूचीकरण का नकारात्मक प्रभाव हो सकता है, क्योंकि यह प्रजाति को विशेष रूप से संग्रहकर्ताओं और शिकारियों के लिए और अधिक वांछनीय बना सकती है।^[3] इस प्रभाव को संभावित रूप से कम किया जा सकता है, जैसे कि चीन में व्यावसायिक रूप से कछुए उत्पन्न करने से, शिकार के प्रति संकटग्रस्त प्रजातियों पर दबाव कुछ कम हो रहा है।^[4]

सूचीबद्ध प्रजातियों के साथ एक और समस्या, किसी ज़मीन से लुप्तप्राय प्रजातियों को साफ़ करने के 'गोली मारो, ठेलो और चुप रहो' तरीके के उपयोग को उकसाने के प्रति उसका प्रभाव है। संप्रति कुछ ज़मीन मालिक, अपनी ज़मीन पर लुप्तप्राय जानवर के पाए जाने के बाद उसकी क्रीमत में कमी अनुभव करते हैं। उन्होंने कथित तौर पर, अपनी ज़मीन से समस्या के निदान के लिए, चुपचाप जानवरों को मारने और दफनाने या उनके निवास स्थान को नष्ट करने का विकल्प चुना है, लेकिन ऐसे में उसके साथ-साथ, लुप्तप्राय प्रजातियों की आबादी भी कम हो जाती है।^[5] लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियमकी प्रभावशीलता पर, जिसने "लुप्तप्राय प्रजातियां" शब्द को गढ़ा है, व्यापार तथा उसके प्रकाशनों के समर्थक समूहों द्वारा सवाल उठाया गया है, लेकिन फिर भी इन प्रजातियों के साथ काम करने वाले, वन्य-जीव वैज्ञानिकों द्वारा, इसे व्यापक रूप से प्रभावी बरामदगी उपकरण के रूप में मान्यता दी गई है। उन्नीस प्रजातियों को सूची से हटाया तथा बरामद कर लिया गया है^[6] और पूर्वोत्तर संयुक्त राज्य अमेरिका में सूचीबद्ध प्रजातियों में से 93% में पुनर्लाभ या स्थिर आबादी है।^[7]

इस समय, दुनिया में 1,556 ज्ञात प्रजातियों की विलुप्त होने के रूप में पहचान की गई है और वे सरकारी कानून (ग्लेन, 2006, वेबपेज) द्वारा सुरक्षा के तहत हैं। यह सन्निकटन, बहरहाल, लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम जैसे कानूनों के संरक्षण के तहत असम्मिलित, संकटग्रस्त प्रजातियों की संख्या को हिसाब में नहीं लेता है। नेचरसर्व के वैश्विक संरक्षण की स्थिति के अनुसार, लगभग तेरह प्रतिशत कशेरुकी (समुद्री मछली को छोड़ कर), सत्रह प्रतिशत संवहनी पौधे और छह से अठारह प्रतिशत तक कवक जोखिम के तहत माने गए हैं (विलकोव एंड मास्टर, 2008, पृ. 415-416)। इस प्रकार, कुल मिला कर, सात से अठारह प्रतिशत तक, अमेरिका के ज्ञात जानवर, कवक और पौधे, विलोपन के नज़दीक हैं (विलकोव एंड मास्टर, 2008, पृ. 416)। यह कुल संख्या संयुक्त राज्य अमेरिका में लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम के तहत संरक्षित प्रजातियों की संख्या से अधिक है, जिसका अर्थ है कि कई प्रजातियां धीरे-धीरे विलोपन के करीब होती जा रही हैं।

नैतिकता का प्रश्न

इन प्रजातियों के बारे में अधिक जानने की खोज के मामले में भी, कई परिस्थिति-विज्ञानी, पर्यावरण और निवासियों पर उनके प्रभाव पर विचार नहीं करते हैं। यह स्पष्ट है कि "पारिस्थितिकी ज्ञान का अन्वेषण, जो मूल्यवान पारिस्थितिकी तंत्र की संपत्ति और सेवाओं के साथ-साथ पृथ्वी की जैव विविधता के संरक्षण के बारे में समझने के प्रयासों के सूचनार्थ बहुत महत्वपूर्ण है, अक्सर जटिल नैतिक सवाल उठाता है",^[8] और इन मुद्दों को पहचानने और उन्हें सुलझाने के लिए कोई स्पष्ट रास्ता नहीं है। पर्यावरणविद, व्यक्तिगत पशुओं के कल्याण की बजाय, समग्र पारिस्थितिकीय क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ऐसे व्यापक दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करने से प्रत्येक व्यक्तिगत प्राणी का मूल्य घट जाता है। "इस समय जैव-विविधता संरक्षण दुनिया के सतही क्षेत्र के 11.5% संसाधन प्रबंधन के लिए आधारभूत लक्ष्य है।^[9] जीवन का अधिकांश भाग इन संरक्षित क्षेत्रों से बाहर आता है और यदि लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण प्रभावी होना है, तो उन पर विचार किया जाना चाहिए।[4,5,6]

जैव विविधता और लुप्तप्राय प्रजातियों पर प्रभाव

ग्रह की जैव विविधता के संरक्षण के लिए, हमें विचार करना होगा कि क्यों अनेक प्रजातियां लुप्त होती जा रही हैं। "अमेरिका में आवास नुकसान प्रजातियों के संकटग्रस्त होने का सबसे व्यापक कारण है, जो जोखिम वाली प्रजातियों में 85% को प्रभावित करता है" (विलकोव एंड मास्टर, 2008, पृ. 416)। जब किसी जानवर के पारिस्थितिकी तंत्र का अनुरक्षण नहीं होता है, वे अपना घर खो बैठते हैं और नए परिवेश को अपनाने या नष्ट होने के लिए मजबूर हो जाते हैं। प्रदूषण एक और कारक है जो कई प्रजातियों के, विशेष रूप से बड़ी मात्रा में जलीय जीवों के लुप्तप्राय होने का कारण बनता है। इसके अलावा, अतिशोषण, बीमारी (विलकोव एंड मास्टर, 2008, पृ. 416) और जलवायु परिवर्तन (कोटियाहो एट अल., 2005, पृ. 1963) के कारण कई प्रजातियां लुप्तप्राय हुई हैं।

बहरहाल, दुनिया में अधिकांश वन्य जीवों के लुप्तप्राय होने का प्रमुख महत्वपूर्ण कारक, प्रजातियों पर मानव प्रभाव और उनका परिवेश है। "पिछली कुछ सदियों से मानवों द्वारा संसाधन, ऊर्जा और स्थलों के उपयोग में तेज़ी आई है, दुनिया के अधिकांश भागों में जैव विविधता में पर्याप्त रूप से हास हुआ है" (ईश्वरन एंड एर्डेलेन, 2006, पृ.179)। मूलतः, पर्यावरण पर जैसे-जैसे मानव का प्रभाव बढ़ता है, जीवन की विविधता घटती जाती है। लोग लगातार अपने लिए अन्य प्रजातियों के संसाधनों और स्थलों का उपयोग करने लगे हैं, जो नकारात्मक रूप से कई जीवों के अस्तित्व दर को प्रभावित कर रहा है।

लोग अपने मानक भी तय करते हैं कि किन प्रजातियों को बचाया जाना चाहिए और कौन-सी प्रजातियां उनके लिए महत्वहीन या अवांछनीय हैं। उदाहरण के लिए, हवाई की आक्रामक प्रजाति कॉकी मेंढक, वहां इतनी आम है कि उसके 'रात के गाने' से घरों की क्रीमते कम हो जाती हैं और वे जंगलों के निकट होटलों को कमरों का उपयोग करने से रोकते हैं। हवाई के लोगों ने मेंढक को नष्ट करने का प्रस्ताव किया है और कई वन्य जीव प्रबंधकों ने मेंढकों को मारने के लिए एक रोगजनक छोड़ने का प्रस्ताव रखा है (मिन्टीर एंड कॉलिन्स, 2005, पृ. 333)। मेंढक ने घरों की क्रीमते कम की हैं और कई होटलों के व्यापार को क्षति पहुंचाई है, इसलिए हवाई के लोगों ने फ़ैसला लिया है कि उनके निकट रहने वाले कॉकी मेंढकों के समूह से छुटकारा पाना उन्हें स्वीकार्य है।

एक अन्य उदाहरण जहां मानवीय प्रभाव ने किसी प्रजाति के लिंग की भलाई को प्रभावित किया है, वह है वरमॉन्ट के एरोहेड झील में खुद को बसाने वाले गैर देशीय म्यूट हंस। जब हंसों की आबादी आठ पक्षियों तक बढ़ गई, तो वरमॉन्ट के मत्स्य और वन्य-जीव विभाग ने कार्रवाई करने का फ़ैसला किया। अंततः दो हंसों को मार डाला गया, जिससे पशु कल्याण संगठन और झील के पास रहने वाले लोग क्रोधित हुए (मिन्टीर एंड कॉलिन्स, 2005, पृ. 333)। एरोहेड झील के हंसों का मामला यह दर्शाता है कि मानव मान्यताओं के आधार पर प्राकृतिक परिवेश पर विचार किया जाता है। सिर्फ़ इस कारण से कि प्राकृतिक रूप से हंस वहां नहीं बसे थे, इसका तात्पर्य यह नहीं कि वह उनके प्राकृतिक निवास स्थान का हिस्सा नहीं है और निश्चित रूप से केवल मानव असंतोष के कारण उन्हें नष्ट करने का कोई कारण नहीं बनता है।

लुप्तप्राय प्रजातियों के जीवन में मानव प्रभाव का एक और उदाहरण है प्रेबल घास के मैदानों में फुदकने वाले चूहे। अनुसंधानों से पता चला है कि चूहे, बेयर लॉज फुदकने वाले चूहों से वर्गिकीय रूप से अलग नहीं है और अमेरिकी मत्स्य और वन्य-जीव सेवा ने इस सूचना के आधार पर लुप्तप्राय प्रजातियों की सूची से प्रेबल चूहे को हटाने का प्रस्ताव रखा है (मिन्टीर एंड कॉलिन्स, 2005, पृ. 333)। यह उदाहरण प्रजाति के अनुरक्षण के निर्धारण में विज्ञान की भूमिका को विचाराधीन लाता है। यह प्रश्न उठाता है कि क्या जैव विविधता के संरक्षण के समर्थन में संसाधन के तौर पर केवल वैज्ञानिक सबूत का ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

मौजूदा प्रजातियों पर मानव प्रभाव का एक अंतिम उदाहरण, पर्यावरण अनुसंधान में पैर के अंगूठे के कतरन का मुद्दा है। परिस्थिति-विज्ञानी जहां संरक्षण के तरीकों के प्रति अपने ज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रजातियों पर शोध कर रहे हैं, वहीं इसके कारण जिन वन्य-जीवों का वे अध्ययन कर रहे हैं, उन पर पड़ने वाले प्रभाव पर भी विचार किया जाना चाहिए। पैर की अंगुली की कतरन के बारे में "रिपोर्ट किया गया है कि परिणामस्वरूप पाद और अंगों में सूजन तथा संक्रमण सहित पशुओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है" (मिन्टीर एंड कॉलिन्स, 2005, पृ. 334)। यह उदाहरण दर्शाता है कि प्रजाति के संरक्षण में सहायतार्थ अनुसंधान से पूर्व कैसे लोगों को पशुओं की भलाई के बारे में भी विचार करना चाहिए। प्रजातियों और उनके परिवेश पर मानवीय प्रभाव का बहुत

ही नकारात्मक असर पड़ता है। लोगों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि दुनिया में सभी प्रजातियों के अनुरक्षण और उनके विकास को बाधित ना करने में मदद करें।

प्रजातियों के अनुरक्षण का महत्व

"मानव जीवन के विकास के लिए जीवन और जीवन प्रणालियों की विविधता एक आवश्यक शर्त है" (ईश्वरन एंड एर्डेलेन, 2006, पृ.179). कई लोग आज की दुनिया में जैव-विविधता के अनुरक्षण के महत्व पर सवाल उठाते हैं, जहां संरक्षण प्रयास महंगे साबित होते हैं और जिनमें काफ़ी समय लगता है। तथ्य यह है कि मानव अस्तित्व के लिए सभी प्रजातियों का संरक्षण आवश्यक है। प्रजातियों को "सौंदर्य और नैतिक औचित्य के लिए; मानव कल्याण के लिए आवश्यक उत्पादों तथा सेवाओं के प्रदाता के रूप में जंगली प्रजातियों की महत्ता; विशिष्ट प्रजातियों का मूल्य पर्यावरणीय स्वास्थ्य सूचक रूप में या पारिस्थितिकी प्रणालियों के कार्य करने के लिए मूल तत्व प्रजातियों का महत्व; और वन्य जीवों के अध्ययन से हासिल वैज्ञानिक सफलताओं" के लिए बचाया जाना चाहिए. (विलकोव एंड मास्टर, 2008, पृ. 418). दूसरे शब्दों में, प्रजाति कला और मनोरंजन के स्रोत के रूप में सेवा करते हैं, मानव की भलाई के लिए दवा जैसे उत्पाद उपलब्ध कराते हैं, समग्र पर्यावरण और पारिस्थितिकी के कल्याण का संकेत देते हैं और अनुसंधान उपलब्ध कराते हैं, जिनके परिणामस्वरूप वैज्ञानिक खोज संभव हो सके हैं। लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण के "सौंदर्यपरक औचित्य" का एक उदाहरण है, एल्लोस्टोन राष्ट्रीय उद्यान में भूरे भेड़िये का प्रवेश. भूरे भेड़िये की वजह से उद्यान में पर्यटकों की संख्या भारी मात्रा में बढ़ी है और इसने संरक्षित क्षेत्र में जैव विविधता में योग दिया है। (विलकोव एंड मास्टर, 2008, पृ. 418).

मानव की भलाई के लिए उत्पादों के प्रदाता के रूप में लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण के समर्थन का एक अन्य उदाहरण है, स्क्रब मिंट. यह पाया गया है कि स्क्रब मिंट में कवकरोधी कारक और प्राकृतिक कीटनाशक मौजूद है। (विलकोव एंड मास्टर, 2008, पृ. 418) इसके अलावा, गंजे गिद्ध और बहरे बाज़ की अधोगति ने "DDT और अन्य स्थाई कीटनाशकों के व्यापक छिड़काव से जुड़े संभावित स्वास्थ्य खतरों के प्रति लोगों को सतर्क कर दिया" (विलकोव एंड मास्टर, 2008, पृ. 418).[7,8,9]

यह एक दृष्टांत के रूप में करता है कि कैसे कोई मछली पर्यावरणीय स्वास्थ्य की पहचान कराने वाले घटक के रूप में मददगार हो सकती है और मानव जीवन तथा अन्य प्रजातियों की रक्षा कर सकती है। अंत में, वैज्ञानिक खोजों में सहायक प्रजातियों में एक उदाहरण है प्रशांत यू. जो "टेक्सॉल का स्रोत बन गया, जोकि अब तक की खोजों में सबसे शक्तिशाली कैंसर-रोधी यौगिक है" (विलकोव एंड मास्टर, 2008, पृ. 418-419). लुप्तप्राय प्रजातियां मानव विकास, जैव विविधता के अनुरक्षण और पारिस्थितिकी प्रणालियों के संरक्षण में उपयोगी साबित हो सकती हैं।

लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा में मदद

संरक्षण करने वालों का लक्ष्य है, लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण और जैव विविधता के अनुरक्षण के लिए तरीके बनाना और उनका विस्तार करना. दुनिया की विलुप्त होने जा रही प्रजातियों के संरक्षण में, कई तरीकों से सहायता की जा सकती है। इनमें एक तरीका है, प्रजातियों के विभिन्न समूहों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना, खास कर अकशेरुकी, कवक और समुद्री जीवों के बारे में, जहां पर्याप्त डाटा की कमी है।

उदाहरण के लिए, आबादी में गिरावट और विलोपन के कारणों को समझने के लिए, फ़िनलैंड में तितलियों की आबादी पर एक प्रयोग किया गया। इस विश्लेषण में, तितलियों का संकटग्रस्त सूची वर्गीकरण, वितरण, घनत्व, डिंबक विशिष्टता, प्रसारण क्षमता, वयस्क प्राकृतिक-वास का विस्तार, उड़ान अवधि और शरीर का आकार, सभी के संबंध में अभिलेख दर्ज और परीक्षण किए गए, ताकि प्रत्येक प्रजाति की संकट स्थिति का निर्धारण किया जा सके. यह पाया गया कि तितलियों के वितरण में साढ़े एक्यावन प्रतिशत तक की गिरावट आई है और उनका प्राकृतिक-वास गंभीर रूप से प्रतिबंधित हैं। विशिष्ट तितलियों के वितरण दर में गिरावट का एक उदाहरण है, फ़िग्गा का फ़िटिलरी और ग्रिज़ल्ल स्किपर, जो दलदल के व्यापक निकासी के फलस्वरूप उनके प्राकृतिक-वास क्षतिग्रस्त होने के कारण प्रभावित हुए हैं। (कोटियाहो एट अल., 2005, पृ. 1963-1967). इस प्रयोग से साबित होता है कि जब हमें जोखिम के कारण ज्ञात हों, तो हम सफलतापूर्वक जैव विविधता प्रबंधन के लिए समाधान तैयार कर सकते हैं।

लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण में मदद का एक अन्य तरीका है, पर्यावरणीय नैतिकता को समर्पित एक नए व्यावसायिक समाज का निर्माण. इससे परिस्थिति-विज्ञानियों को जैव विविधता के अनुसंधान और प्रबंधन में नैतिक निर्णय लेने में मदद मिल सकती है। इसके अलावा, पर्यावरण नैतिकता पर अधिक जागरूकता पैदा करने से प्रजातियों के संरक्षण को प्रोत्साहित करने में सहायता मिल सकती है। "छात्रों के लिए नैतिकता पाठ्यक्रम और परिस्थिति-विज्ञानियों और जैव विविधता प्रबंधकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों" से पर्यावरण संबंधी जागरूकता पैदा हो सकती है और अनुसंधान तथा प्रबंधन में आचार संहिता के उल्लंघन को रोका जा सकता है (मिन्टीर एंड कॉलिन्स, 2005, पृ. 336). लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण का एक अंतिम उपाय है, संघीय एजेंसी निवेश और संघीय सरकार द्वारा संरक्षण अधिनियमन के माध्यम से बचाव. "परिस्थिति-विज्ञानियों ने जैव विविधता संरक्षण एकीकृत करने और वर्धमान

बड़े पैमाने पर सामाजिक आर्थिक विकास के लिए, जैविक गलियारों, जैव मंडल भंडार, पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और पर्यावरण-क्षेत्रीय योजना प्रस्तावित किया है " (ईश्वरन एंड एर्सेलेन, 2006, पृ.179).

संघीय अधिदेशाधीन संरक्षण अंचल का एक उदाहरण है, उत्तर-पश्चिमी हवाई द्वीपों का समुद्री राष्ट्रीय स्मारक, जो कि दुनिया में सबसे बड़ा समुद्री संरक्षित क्षेत्र है। अंतर्जलीय समुदायों और अधिक मछलीमारी वाले क्षेत्रों के संरक्षण के लिए स्मारक ज़रूरी है। केवल इस क्षेत्र में काम कर रहे अनुसंधानकर्ताओं को मछली मारने की अनुमति दी गई है, मूंगे हटाए नहीं जा सकते हैं और होमलैंड सुरक्षा विभाग, उपग्रह इमेजिंग के ज़रिए पानी से गुजरने वाले जहाज़ों पर प्रतिबंध लागू करते हैं। स्मारक अनुमानित सात हज़ार प्रजातियों के लिए, अधिकांशतः जो दुनिया में और कहीं भी नहीं पाए जा सकते, निवास का कार्य करेगा (रेलॉफ़, 2006, पृ. 92). यह पर्यावरणीय स्मारक यह तथ्य दर्शाता है कि लुप्तप्राय प्रजातियों के लिए एक सुरक्षित वातावरण का निर्माण, साथ ही दुनिया के सबसे बड़े पारिस्थितिकी प्रणालियों में से कुछ का अनुरक्षण संभव है। [8,9,10]

बंदी प्रजनन कार्यक्रम

बंदी प्रजनन, वन्य-जीव परिरक्षित क्षेत्रों, चिड़ियाघरों और अन्य संरक्षण सुविधा स्थलों जैसे प्रतिबंधित मानव नियंत्रित वातावरण में दुर्लभ या लुप्तप्राय प्रजातियों के प्रजनन की प्रक्रिया है। बंदी प्रजनन का प्रयोजन विलुप्त होने वाली प्रजातियों को बचाना है। इससे अपेक्षा की जाती है कि प्रजाति की आबादी स्थिर हो, ताकि वह लुप्त के लिए खतरे से बच सके। [1]

कुछ समय के लिए इस तकनीक का सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया, संभवतः प्राचीनतम ज्ञात बंदी संभोग के ऐसे उदाहरणों के लिए यूरोपीय और एशियाई शासकों की व्यवस्था को श्रेय दिया जा सकता है, चर्चाधीन मामला है पेरे डेविड का मृग। बहरहाल, बंदी प्रजनन तकनीक, आम तौर पर कुछ प्रवासी पक्षियों (उदा. सारस) और मछलियों (उदा. हिल्सा) जैसी अत्यंत गतिशील प्रजातियों के लिए लागू करना मुश्किल होता है। इसके अतिरिक्त, यदि बंदी प्रजनन की आबादी बहुत कम है, तो न्यून जीन पूल के कारण अंतःप्रजनन हो सकता है; इससे आबादी में रोगों के लिए प्रतिरक्षा की कमी संभव है।

लाभ के लिए वैध निजी उत्पादन

जहां अवैध शिकार के कारण लुप्तप्राय जानवरों की आबादी में काफी कमी हो सकती है, वहीं लाभार्थ वैध निजी उत्पादन का विपरीत प्रभाव पड़ता है। वैध निजी उत्पादन से दोनों, दक्षिणी काले गैंडा और सफेद गैंडा की आबादी में काफी वृद्धि हुई है। IUCN के एक वैज्ञानिक अधिकारी, डॉ॰ रिचर्ड एम्सली ने ऐसे कार्यक्रमों के बारे में कहा, "मुख्यतः निजी स्वामित्व वाले जानवरों की वजह से, प्रभावी कानून का प्रवर्तन अब बहुत ही आसान हो गया है।.. हम संरक्षण कार्यक्रम में स्थानीय समुदायों को लाने में सक्षम हो गए हैं। पारिस्थितिकी पर्यटन या लाभार्थ बेचने के लिए केवल अवैध शिकार की जगह, गैंडे की देख-रेख से आर्थिक प्रोत्साहन जुड़े हैं। अतः कई मालिक उन्हें सुरक्षित रख रहे हैं। निजी क्षेत्र, हमारे काम में सहायतार्थ महत्वपूर्ण है।" [10]

विचार-विमर्श

Endangered Species Day : दुनिया में जीव-जंतुओं की लाखों प्रजाति पाई जाती हैं। इनमें से कई प्रजातियां ऐसी हैं, जो पूरी तरह से विलुप्त हो चुकी हैं। वहीं कई प्रजातियां ऐसी भी हैं, जो विलुप्त होने के कगार पर खड़ी हैं। ऐसे में इस गंभीर समस्या के बारे में लोगों को जागरूक करने और विलुप्त होती प्रजातियों को बचाने के लिए हर साल मई महीने के तीसरे शुक्रवार को National Endangered Species Day यानि राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति दिवस मनाया जाता है। साल 2006 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने यह दिवस मनाने पर जोर दिया था। तो चलिए आज हम जानवरों की पांच ऐसी प्रजातियों के बारे में जानेंगे, जो सिर्फ भारत में पाई जाती हैं।

एशियाई सिंह

एशियाई सिंह असल में शेर की एक प्रजाति है, जो सिर्फ भारत में पाई जाती है। गुजरात के गिर में पाए जाने वाले इन शेरों को भारतीय शेर भी कहा जाता है। विलुप्ति की कगार पर पहुंच चुकी शेरों की इस प्रजाति के करीब 600 शेर गिर के जंगलों में पाए जाते हैं। हालांकि पिछले कुछ सालों में इनकी संख्या में इजाफा हुआ है।

संगाई हिरण

मणिपुर का राजकीय पशु संग्गाई हिरण सिर्फ भारत के मणिपुर में ही पाया जाता है। कई लोग इसे नाचने वाला हिरण भी कहते हैं। साल 1950 में संग्गाई हिरण को लगभग विलुप्त मान लिया गया था। हालांकि बाद में यह मणिपुर में पाया गया था। वर्तमान में 200 से 300 संग्गाई हिरण मणिपुर में हैं।

नीलगिरि तहर

नीलगिरि तहर भारत के तमिलनाडु और केरल में मौजूद नीलगिरि पर्वत और पश्चिमी घाट के दक्षिणी इलाकों में पाया जाता है। भारत के अलावा यह जानवर दुनिया में कहीं नहीं पाया जाता है। किसी समय इनकी संख्या महज 100 रह गई थी, लेकिन सरकार के प्रयासों की चलते वर्तमान में इनकी संख्या करीब 2000 हो गई है। इनके संरक्षण के लिए तमिलनाडु सरकार ने 'नीलगिरि तहर संरक्षण परियोजना' शुरू की है। इसके अलावा 7 अक्टूबर को 'नीलगिरी तहर दिवस' भी मनाया जाता है।

गोडावण

सोन चिरैया के नाम से प्रसिद्ध गोडावण राजस्थान का राजकीय पक्षी है। यह भारत के राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में पाया जाता है। शतुरमुर्ग जैसा दिखाई देने वाला यह पक्षी आज विलुप्त होने की कगार पर पहुंच चुका है। वर्तमान में इनकी संख्या 200 से भी कम हो गई है। हालांकि सरकार इन्हें बचाने की कोशिश कर रही है।

लायन-टेल्ड मकाक

शेर के मुंह जैसी बनावट वाला लायन-टेल्ड मकाक बंदर भी विलुप्तप्राय प्राणी की श्रेणी में आ गया है। शेर की तरह इसकी गर्दन पर भी लंबे-लंबे बाल होते हैं। यह कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में पश्चिमी घाट के वर्षा वनों में पाया जाता है। एक रिपोर्ट के अनुसार इनकी संख्या करीब 4000 हो सकती है। [9,10]

परिणाम

लुप्तप्राय प्रजाति जानवर या पौधे की एक प्रजाति है जिसका जंगली अस्तित्व खतरे में माना जाता है। जैसे-जैसे दुनिया मानवीय गतिविधियों और मानव आबादी से अधिक भीड़ग्रस्त होती जा रही है, जानवरों की प्रजातियाँ अपने मूल निवास स्थान खोती जा रही हैं, प्रदूषण और अन्य खतरों का शिकार हो रही हैं, व्यापार के लिए पकड़ी जा रही हैं और खेल, भोजन और मानव भय जैसे कारणों से मार दी जा रही हैं। पौधों में समान समस्याएं हैं, जिनमें आक्रामक प्रजातियों द्वारा भीड़भाड़ और मोनोकल्चर बढ़ती आदतों और पौधों की सामग्री के आनुवंशिक संशोधन से प्रभावित होना शामिल है। लुप्तप्राय प्रजातियों को IUCN रेड लिस्ट (प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ) में उनके अस्तित्व के खतरों के आधार पर स्थान दिया गया है।

कई देश विधायी और नीतिगत उपायों के माध्यम से जानवरों और पौधों की प्रजातियों की रक्षा करना चाहते हैं। इस तरह के कानून संरक्षण और बहाली उपायों की एक श्रृंखला को कवर करते हैं जिनमें देशी प्रजातियों की सुरक्षा, कीट प्रजातियों को हटाना, जानवरों के निर्यात पर प्रतिबंध, संगरोध कानून, निवास स्थान की बहाली और सुरक्षा, शिकार या खेती पर प्रतिबंध, पार्क और रिजर्व का निर्माण आदि शामिल हैं। इन उपायों की प्रभावशीलता अलग-अलग होती है और यह काफी हद तक प्रत्येक देश की विधायी प्रावधानों और नीतियों को लागू करने की इच्छा पर निर्भर करती है।

ऐसे कई खतरे स्रोत हैं जो जानवरों और पौधों दोनों पर प्रभाव डालते हैं। कुछ प्रमुख खतरों में शामिल हैं:

- मनुष्य: मानवीय गतिविधि और हस्तक्षेप (प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों) लुप्तप्राय प्रजातियों के लिए सबसे बड़ा खतरा है। कृषि भूमि और मानव आवास के लिए पेड़ों को काटना, जानवरों को उनके घर या कामोत्तेजक के लिए मारना या क्योंकि लोग जानवरों से डरते हैं, आनुवंशिक रूप से जानवरों और पौधों को संशोधित करना, जानवरों को ट्रॉफी के रूप में उपयोग करना, आवासों को प्रदूषित करना (उदाहरण के लिए भूमि, जल निकाय और समुद्र; , झीलों का अम्लीकरण), मोनोकल्चर के विशाल पथ को लागू करना, वातावरण को गर्म करना आदि कुछ ऐसे तरीके हैं जिनसे मानव गतिविधियों ने लुप्तप्राय प्रजातियों पर नकारात्मक प्रभाव डाला है। मनुष्य चतुर है, लेकिन वह इस बारे में सब कुछ नहीं जान सकता कि विकास में हस्तक्षेप कैसे होगा और विशेष प्रयोजनों के लिए प्रजातियों के मानव चयन की कुछ प्रक्रियाओं ने कृत्रिम विलुप्ति का कारण बना दिया है, जिससे विशेष पारिस्थितिकी तंत्र में शेष वन्यजीवों और पौधों के लिए बहुत सारी समस्याएं पैदा होती हैं।
- जलवायु परिवर्तन: मानव औद्योगिक गतिविधियों के माध्यम से वायुमंडल में जारी ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में वृद्धि से, आवासों को स्थायी रूप से बदला जा रहा है, जिससे कुछ प्रजातियों का पनपना कठिन हो गया है। उदाहरण के लिए, ध्रुवीय बर्फ के पिघलने से वे क्षेत्र कम हो जाते हैं जहां ध्रुवीय भालू रह सकते हैं और प्रजनन कर सकते हैं, जबकि भारी वर्षा और ग्रीनहाउस गैसों में वृद्धि के कारण होने वाला अत्यधिक सूखा बाढ़, आग और अन्य प्रकार के आवास विनाश का कारण बनता है।
- आक्रामक प्रजातियाँ: मानव ने कई प्रजातियों को दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पेश किया है, जहाँ शुरू की गई प्रजातियों ने देशी प्रजातियों के लिए समस्याएं पैदा की हैं, जो कि शुरू की गई प्रजातियों के तरीकों और शक्तियों से अप्रयुक्त हैं। जंगली

जानवर और आक्रामक पौधे जो अपने नए वातावरण में पनपते हैं, अक्सर स्थानीय प्रजातियों की कीमत पर ऐसा करते हैं। डोडो पक्षी किसी पशु प्रजाति के विलुप्त होने का कारण बनने वाली प्रचलित प्रजातियों का एक बहुत प्रसिद्ध मामला है; मॉरीशस में मनुष्यों के आने के बाद, वे अपने साथ बिल्लियाँ, चूहे, कुत्ते और बंदर लाए, जिन्होंने अंततः डोडो पक्षियों का शिकार किया और उनका सफाया कर दिया।

- कृषि पद्धतियाँ: खेतों से भूमि के अन्य क्षेत्रों और जल निकायों में बहाव कई स्थलीय और जलीय प्रजातियों को खतरे में डालने में एक बड़ी भूमिका निभाता है, जिसमें बीमारियाँ और रसायन दोनों होते हैं जिनका सामना करने में पशु और पौधों की प्रजातियाँ संक्षम नहीं होती हैं। मोनोकल्चरल प्रथाएँ भूमि पर अनुभव की जाने वाली सामान्य विविधता को कम करती हैं और बीमारी की संभावना को बढ़ाती हैं। बदले में, पौधों पर छिड़के गए कीटनाशक या पौधों में आनुवंशिक रूप से संशोधित अन्य गैर-लक्षित, गैर-कीट प्रजातियों के लिए नए खतरे पैदा करते हैं जो कीटनाशकों (जैसे मोनार्क तितलियों, छोटे स्तनधारियों, आदि) द्वारा मारे जा सकते हैं या जंगली पौधों को खतरा हो सकता है। मानव द्वारा निर्मित आनुवंशिक सामग्री के संभावित क्रॉसओवर से संदूषण द्वारा।
- अवैध पालतू व्यापार: कुछ जानवरों को पालतू जानवर के रूप में अवैध खरीद से खतरा है, जैसे वानर, बंदर और उष्णकटिबंधीय पक्षी। इनमें से कई पालतू जानवर जीवित नहीं रह पाते क्योंकि लोग नहीं जानते कि उनकी ठीक से देखभाल कैसे की जाए, जानवरों को आवश्यक भोजन नहीं दे पाते या जानवरों को मानवीय बीमारियों से संक्रमित नहीं कर पाते (वानरों के मामले में यह एक बड़ी समस्या है)।
- अवैध शिकार: भोजन, औषधीय तैयारियों और टाफियों के लिए जानवरों का अवैध शिकार एक बड़ी समस्या है। कई अवैध शिकार विरोधी कार्यक्रम मौजूद हैं लेकिन वे हमेशा सफल नहीं होते हैं और जानवरों को अवैध शिकार से बचाने वालों के लिए कई खतरे हैं।
- पर्यावास का विनाश: चाहे यह खेती, वानिकी, आवास या अन्य तरीकों से हो, दुनिया भर के अधिकांश देशों में जानवरों और पौधों की प्रजातियों को नष्ट करने में निवास स्थान का विनाश एक प्रमुख शक्ति है। जगह की कमी कई पशु प्रजातियों के लिए एक और बड़ा मुद्दा है, खासकर जब मानव निवास जानवरों के सामान्य क्षेत्र का अतिक्रमण करता है। यह हाथियों जैसी बड़ी प्रजातियों के साथ एक समस्या है, जो फसलों को नष्ट कर सकते हैं, प्रजनन के मौसम के दौरान लोगों पर हमला कर सकते हैं और मानव संरचनाओं को नष्ट कर सकते हैं। कई ग्रामीण डर के मारे हाथियों को मारने की जरूरत महसूस करते हैं।

संपूर्ण पारिस्थितिकी पर प्रभाव

खाद्य श्रृंखला से किसी एक पशु प्रजाति को हटाने से खाद्य श्रृंखला के नीचे और ऊपर दोनों जगह चिंताजनक प्रभाव पड़ता है। शिकारी और शिकार प्रजातियों के बीच और यहां तक कि पौधों के साम्राज्य के भीतर भी एक अच्छा पारिस्थितिक संतुलन है। जब कुछ जानवरों या पौधों की प्रजातियाँ हटा दी जाती हैं या विलुप्त हो जाती हैं, तो इससे अन्य प्रजातियाँ नियंत्रण से बाहर हो सकती हैं और उनकी संख्या में वृद्धि के खतरे के बिना हावी हो सकती हैं। यह उन प्रजातियों के लिए बड़ा नुकसानदायक हो सकता है जो बढ़ती हैं - उदाहरण के लिए, यदि शेर विलुप्त हो जाते हैं, तो मृग और ज़ेबरा जैसी शिकार प्रजातियाँ क्षमता से अधिक बढ़ जाएंगी, पौधों के जीवन को विलुप्त होने के बिंदु तक खा जाएंगी और इस तरह जोखिम में पड़ जाएंगी। कम खाद्य स्रोतों, कम छाया और कम ऑक्सीजन उत्पादन के कारण अन्य प्रजातियों का जीवन प्रभावित हो रहा है।

आईयूसीएन सूची

लुप्तप्राय प्रजातियों पर नजर रखने में अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) की विशेष भूमिका है। इसका प्रजाति अस्तित्व आयोग (एसएससी) दुनिया भर में सभी जानवरों और पौधों की प्रजातियों की स्थिति पर नज़र रखता है। इसका उद्देश्य संरक्षण उपाय प्रदान करना है जो राष्ट्रीय सरकारों को प्रजातियों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए रणनीतियों को लागू करने में मदद कर सके।

प्रत्येक वर्ष SSC संकटग्रस्त प्रजातियों की IUCN लाल सूची प्रकाशित करता है। इस सूची में दुनिया भर में सभी जीवित प्रजातियों की स्थिति पर वार्षिक अद्यतन जानकारी शामिल है।

IUCN रेड लिस्ट की श्रेणियाँ हैं:

- विलुप्त: प्रजाति का अंतिम व्यक्ति मर गया है
- जंगल में विलुप्त: यह प्रजाति अब जंगल में जीवित नहीं है लेकिन कैद या प्रजनन कार्यक्रमों में अभी भी जीवित है

- गंभीर रूप से लुप्तप्राय: इस प्रजाति के जंगल में विलुप्त होने का अत्यधिक खतरा है
- लुप्तप्राय: दुनिया में विलुप्त होने का बहुत अधिक खतरा
- सुभेद्य: जंगल में विलुप्त होने का उच्च जोखिम
- निकट संकटग्रस्त: निकट भविष्य में संकटग्रस्त श्रेणी के लिए अर्हता प्राप्त करने की संभावना
- कम से कम चिंता: प्रजातियाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं
- डेटा की कमी: किसी प्रजाति की जनसंख्या के वितरण के बारे में अपर्याप्त जानकारी है।

सीआईटीईएस

लुप्तप्राय प्रजातियों के व्यापार को नियंत्रित करना उनके संरक्षण का एक महत्वपूर्ण पहलू है। सीआईटीईएस वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन का संक्षिप्त रूप है। यह राज्य स्तर पर किया गया एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है और हस्ताक्षरकर्ता इसमें दिए गए प्रावधानों के अनुसार दुनिया भर में जानवरों और पौधों दोनों की लुप्तप्राय प्रजातियों के व्यापार को नियंत्रित करना चाहते हैं। यह 1975 से लागू है और कई हस्ताक्षरकर्ता देश इसके कार्यान्वयन को बहुत गंभीरता से लेते हैं, इसे सीमा नियंत्रण और संगरोध प्रथाओं में शामिल करते हैं, साथ ही इसे घरेलू स्तर पर लागू करते हैं। सीआईटीईएस एक ढांचा प्रदान करता है जिसका उपयोग राष्ट्रीय कानून प्रासंगिक लुप्तप्राय प्रजातियों के व्यापार कानूनों के गठन और प्रवर्तन को निर्देशित करने के लिए कर सकते हैं।

राष्ट्रीय लुप्तप्राय प्रजाति कानून और नीतियाँ

कई देशों ने लुप्तप्राय प्रजाति कानून लागू किया है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी सरकार ने 1973 में लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम (ईएसए) पारित किया, एक ऐसा कानून जिसने कई अन्य देशों के कानून को प्रभावित किया है। ईएसए (और अन्य न्यायालयों में इसी तरह के कार्य) का उद्देश्य लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा करना और उनके आवासों को संरक्षित करना है। ईएसए को अमेरिकी मछली और वन्यजीव सेवा (एफडब्ल्यूएस) - स्थलीय और मीठे पानी की प्रजातियाँ, और राष्ट्रीय समुद्री और वायुमंडलीय प्रशासन राष्ट्रीय समुद्री मत्स्य पालन सेवा (एनओए मत्स्य पालन) - समुद्री प्रजातियाँ दोनों द्वारा लागू किया जाता है।

विलुप्त होने के खतरे में जानवर

दुनिया भर में, हर महाद्वीप और क्षेत्र में ऐसे जानवर हैं जो विलुप्त होने के खतरे में हैं। वानर, बंदर, बड़ी बिल्लियाँ, मगरमच्छ परिवार, कछुए, छिपकलियाँ, साँप, हाथी, जेबरा और मृग, ध्रुवीय भालू, व्हेल और डॉल्फिन, मार्सुपियल्स, गैंडे, भेड़िये, शार्क, सील, मेंढक और टोड और यहाँ तक कि कृतक भी इनमें से कुछ हैं। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जानवरों की प्रजातियाँ खतरे में हैं।[4,5,6]

लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा के संबंध में व्यक्तिगत कार्रवाई मायने रखती है और ऐसी कई चीजें हैं जो आप व्यक्तिगत रूप से और समूह या समुदाय के हिस्से के रूप में कर सकते हैं। यहां कुछ ऐसी चीजें दी गई हैं जिनमें आपकी रुचि हो सकती है:

- ऐसे उत्पाद कभी न खरीदें जिनमें लुप्तप्राय प्रजातियों का उपयोग किया गया हो; अपने दोस्तों को भी बताएं कि क्या नहीं करना चाहिए। कई सरकारों के पास लुप्तप्राय जानवरों या पौधों की सूची होती है जिनका उपयोग अक्सर पर्यटक या अन्य उत्पादों में किया जाता है, अधिक जानकारी के लिए अपने राष्ट्रीय पर्यावरण/सीमा शुल्क/कृषि/विदेशी मामलों आदि विभागों की जाँच करें।
- लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा के लिए याचिकाओं पर हस्ताक्षर करें और मौजूदा और नए संरक्षण उपायों का समर्थन करने के बारे में अपने स्थानीय प्रतिनिधियों और संसदों या विधानमंडलों को प्रस्तुतियाँ दें।
- लुप्तप्राय प्रजातियों के लिए समर्पित ऑनलाइन साइटें देखें ताकि आप प्रजातियों और उन चीजों के बारे में अधिक जान सकें जिनमें आप शामिल हो सकते हैं (नीचे अनुभाग में कुछ सुझाव देखें)।
- लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण और सुरक्षा के लिए समर्पित संगठनों को धन, समय और/या विशेषज्ञता दान करें; उन गैर सरकारी संगठनों और संगठनों की भी तलाश करें जो संरक्षण उपायों से प्रभावित लोगों पर लक्षित आजीविका पहल का समर्थन करते हैं।
- चिड़ियाघर या अन्य कार्यक्रम के माध्यम से लुप्तप्राय जानवरों की प्रजातियों के एक सदस्य को गोद लेना; निरंतर अनुसंधान और संरक्षण उपायों के लिए निधि।

- कार्यक्रमों के साथ साइट पर स्वयंसेवक लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं; ऐसे स्वयंसेवी कार्य में शामिल संगठनों को ऑनलाइन देखें।
- अपने बगीचे को वापस जैव विविधता के स्वर्ग में बदल दें--विभिन्न प्रकार के पौधे उगाएं, देशी जानवरों को चारा खाने दें और अपने बगीचे का उपयोग वहां करें जहां ऐसा करना सुरक्षित हो, आदि। इसके अलावा, अपने बगीचे से आक्रामक प्रजातियों को हटा दें और खरीदारी न करें ऐसे पौधे जिन्हें कीट या खरपतवार के रूप में नामित किया गया है, या ऐसी कोई भी चीज़ जो आपके बगीचे की सीमाओं से बाहर निकलने और आस-पास की भूमि पर कब्ज़ा करने का जोखिम उठाती है। कीटनाशकों और शाकनाशियों के उपयोग से बचें--जैविक रूप से उगाएं और रसायनों के प्राकृतिक विकल्प खोजें।
- आवास को नष्ट करने से बचें; चाहे आप शहर में रहते हों या खेत में, अपने क्षेत्र में जानवरों के आवास के बारे में जानें और सुनिश्चित करें कि इसे परेशान करने से बचें। उदाहरण के लिए, छोटे जानवरों के लिए घर उपलब्ध कराने के लिए खोखले लट्टों को अकेला छोड़ दें और पक्षियों को उस निवास स्थान में वापस जाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए घोंसले के बक्से जोड़ें जो मूल रूप से उनका अपना था। यदि आप पक्षियों को प्रोत्साहित करते हैं, तो उन्हें कांच से टकराने से रोकने के लिए अपनी खिड़कियों पर डिकल्स लगाएँ।
- दबाव में रहने वाले समुदायों को फंड दें ताकि वे जीवित रहने के लिए आवास को नष्ट करने की आवश्यकता से मुक्त हो सकें--ऐसे कई संगठन हैं जो इस उद्देश्य के लिए दान स्वीकार करेंगे।
- एक या कई संरक्षण संगठनों से जुड़ें और नियमित समर्थक बनें; उनके द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लें ताकि आप लुप्तप्राय प्रजातियों के बारे में अधिक जान सकें और अपने दोस्तों और सहकर्मियों के बीच इसका प्रचार कर सकें।
- जब छुट्टी पर हों, तो वन्य जीवन का ध्यान रखते हुए शिविर लगाएं और पदयात्रा करें; जहां मानव उपयोग के लिए रास्ते बनाए गए हैं, उन पर कायम रहें और वनस्पति को नष्ट करने से बचें। कैम्पिंग करते समय अपनी सारी गंदगी बाहर निकालें। और जब कहीं भी वन्य जीवन मौजूद हो तो गाड़ी चलाते समय धीमी गति से चलें ताकि आप सड़क पर घूमने वाले जानवरों से न टकराएं।
- ऐसा करियर चुनें जिसमें आप लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण में शामिल हों।
- उन तरीकों के बारे में सोचें जिनसे आप स्थानीय पर्यावरण को पुनर्स्थापित या बढ़ा सकते हैं, जिस पर आपकी ज़िम्मेदारी है ताकि वन्यजीवों को जीवित रहने में आसानी हो। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास एक खाड़ी वाला खेत है जहां सैल्मन पानी का उपयोग करते हैं, तो फिल्टर पुल बनाने पर विचार करें जो पानी को साफ रखें और पशुधन को ऐसे क्षेत्रों से दूर रखें।
- पौधों और जानवरों दोनों की जैव विविधता के बारे में और जानें। उन स्थानों को खोजने के लिए ऑनलाइन खोज करें जो सक्रिय कार्यक्रमों के माध्यम से विविधता को संरक्षित कर रहे हैं। [7,8,9]

निष्कर्ष

ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के दो शोधकर्ताओं ने इस बात का विश्लेषण किया है कि लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम (ईएसए) कैसे विकसित हुआ है और आगे इसका भविष्य क्या हो सकता है। जबकि, 50 साल पहले दिसंबर 1973 में लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम (ईएसए) लागू होने के बाद से दुनिया में बहुत कुछ बदल गया है।

ओहियो राज्य के ट्रांसलेशनल डेटा एनालिटिक्स इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रोफेसर तान्या बर्जर-वुल्फ की अगुवाई वाली टीम ने टिकाऊ, भरोसेमंद, मानव-प्रौद्योगिकी साझेदारी पर एक लेख के द्वारा जानकारी दी। वहीं, विश्वविद्यालय के कृषि, पर्यावरण और विकास अर्थशास्त्र विभाग की प्रोफेसर एमी एंडो ने लुप्तप्राय प्रजातियों को बचाने में प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अर्थशास्त्र का उपयोग विषय पर लेख के माध्यम से विचार साझा किए।

जर्नल साइंस में प्रकाशित शोध के हवाले से प्रोफेसर बर्जर-वुल्फ और उनके सहयोगियों ने लिखा, हम भारी संख्या में प्रजातियों के विलुप्त होने के बीच में हैं, बिना यह जाने कि हम क्या और कितनी तेजी से इन्हें खो रहे हैं, लेकिन तकनीक इस समस्या से निपटने में मदद कर सकती है।

उदाहरण के लिए, वे जानवरों की प्रजातियों का सर्वेक्षण करने वाले कैमरा ट्रैप और स्मार्टफोन ऐप जैसे उपकरणों के महत्व को उजागर करते हैं जो सिटीजन साइंटिस्ट को कीटों की गिनती करने, पक्षियों के गीतों की पहचान करने और पौधों के अवलोकन करने की रिपोर्ट साझा करने में मदद करते हैं।

प्रोफेसर बर्जर-वुल्फ ने कहा कि नई तकनीक ने वैज्ञानिकों को पहली बार बड़ी संख्या में जानवरों और पौधों की निगरानी करने में मदद की है। वहीं इसको लेकर एक चुनौती भी सामने आई है जो कि आंकड़ों के इन नए स्रोतों से सारी जानकारी निकालने के नए तरीकों को ढूंढना है।

उन्होंने कहा, इन सारे आंकड़ों के होते हुए भी, हम अभी भी दुनिया में जैव विविधता के केवल एक छोटे से हिस्से की निगरानी कर रहे हैं। उस जानकारी के बिना, हम नहीं जानते कि हमारे पास क्या है, विभिन्न प्रजातियां कैसे काम कर रही हैं और लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा के लिए हमारी नीतियां काम कर भी रही हैं या नहीं।

प्रोफेसर बर्जर-वुल्फ ने कहा, सबसे महत्वपूर्ण बात यह सुनिश्चित करना है कि इस प्रक्रिया में इंसानों को शामिल किया जाए। उन्होंने कहा, तकनीक से आंकड़ों को जोड़ने, दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने, लोगों को प्रकृति से जोड़ने और लोगों को लोगों से जोड़ने की आवश्यकता है।

शोध के हवाले से प्रोफेसर बर्जर-वुल्फ ने कहा हम लोगों और प्रकृति के बीच संबंध को खत्म नहीं करना चाहते, हम इसे मजबूत करना चाहते हैं। हम दुनिया की जैव विविधता को बचाने के लिए केवल तकनीक पर ही भरोसा नहीं कर सकते हैं। उन्होंने कहा मानव, तकनीक और एआई के बीच एक मजबूत साझेदारी होनी चाहिए।

प्रोफेसर एंडो ने कहा, लुप्तप्राय प्रजातियों को बचाने की लड़ाई में अर्थशास्त्र को एक और भागीदार होना चाहिए। उन्होंने कहा, अक्सर यह माना जाता है कि लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा करना जीव विज्ञान और पारिस्थितिकी के अंतर्गत आता है। लेकिन अर्थशास्त्र के विभिन्न उपकरण यह सुनिश्चित करने में बहुत सहायक हैं कि लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम को लागू करने के लिए हम जो काम करते हैं वह सफल है। यह हमेशा लोगों के लिए स्पष्ट नहीं होता है।

उदाहरण के लिए, जैव-आर्थिक शोध अर्थशास्त्रियों और जीव विज्ञानियों के बीच एक बहु-विषयक प्रयास है जो यह देखने के लिए मिलकर काम करता है कि मानव व्यवहार पारिस्थितिक प्रक्रियाओं और प्रणालियों के साथ कैसे संपर्क करता है।

उन्होंने कहा, हमें विभिन्न अवलोकनों को ध्यान में रखना होगा। लोग कार्रवाई करते हैं और इससे पारिस्थितिकी तंत्र बदल जाता है और लोग क्या करते हैं की वह बदल जाता है। हमें उन प्रभावों को जानने की जरूरत है। लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा के लिए नए तरीके हो सकते हैं, जैसे निवास स्थान में बदलाव।

उदाहरण के लिए, प्रवास के दौरान पशुपालक बाड़ को अस्थायी रूप से हटा सकते हैं ताकि एल्क या गोजन स्वतंत्र रूप से घूम सकें। यहां बताते चलें कि एल्क या गोजन दुनिया में हिरण परिवार में पाई जाने वाली सबसे बड़ी प्रजातियों में से एक हैं।

तटीय पक्षी प्रवास के दौरान चावल के खेतों में इनकी अस्थायी रूप से बाढ़ जैसी आ सकती है ताकि उन्हें आराम करने और अपनी यात्रा के दौरान भोजन करने की जगह मिल सके।

प्रोफेसर एंडो के मुताबिक, हम समाज को उनके फायदों को बढ़ाने के लिए अस्थायी कार्यों के समय, स्थान और सीमा को अनुकूलित करने के लिए अर्थशास्त्र का सहारा ले सकते हैं।

एक और तरीका जिससे अर्थशास्त्र मदद कर सकता है वह ऐसी नीतियां विकसित करना है जो प्रजातियों को इतना खतरा होने से पहले ही सुरक्षित कर दें कि उन्हें लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम (ईएसए) सुरक्षा की जरूरत पड़े। एक सामान्य मुद्दा यह है कि खतरे में पड़ी प्रजातियों के आवास की रक्षा के लिए कई भू-स्वामियों को मिलकर काम करने की जरूरत पड़ेगी।

लेकिन अक्सर, अगर कुछ जमीन मालिक किसी प्रजाति की रक्षा के लिए कार्रवाई करते हैं, तो अन्य जमीन मालिक सोचेंगे कि उन्हें ऐसा करने की जरूरत नहीं है।

प्रोफेसर एंडो ने कहा, अर्थशास्त्री यह समझने के लिए काम कर रहे हैं कि हम भूमि मालिकों के साथ कैसे तालमेल बैठा सकते हैं जहां हमें कठोर भूमि उपयोग नियमों को लागू न करना पड़े और जीवों के निवास स्थान की रक्षा भी हो जाए। यह एक बहुत ही आशाजनक रणनीति है जो प्रजातियों की रक्षा कर सकती है और ऐसा करने में लोगों की लागत भी कम कर सकती है।^[10]

संदर्भ

1. सुंदरवन बाघ परियोजना. बाघों के विलुप्त होने की जानकारी, वेब-साइट के बाघों पर अनुभाग में उपलब्ध है
2. ↑ "IUCN Red-list statistics (2006)". मूल से 30 जून 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 4 दिसंबर 2009.
3. ↑ Courchamp, Franck. "Rarity Value and Species Extinction: The Anthropogenic Allee Effect". PLoS Biology. अभिगमन तिथि 2006-12-19.



4. ↑ Dharmananda, Subhuti. "Endangered Species issues affecting turtles and tortoises used in Chinese medicine". Institute for Traditional Medicine, Portland, Oregon. अभिगमन तिथि 2006-12-19.
5. ↑ "Shoot, Shovel and Shut Up" (html). Reasononline. Reason Magazine. 2003-12-31. मूल से 21 सितंबर 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2006-12-23.
6. ↑ "USFWS Threatened and Endangered Species System (TESS)". U. S. Fish & Wildlife Service. मूल से 28 जुलाई 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2007-08-06.
7. ↑ "Success Stories for Endangered Species Act". मूल से 10 फ़रवरी 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 4 दिसंबर 2009.
8. ↑ मिन्टीर एंड कॉलिन्स, 2005, पृ. 332
9. ↑ ईश्वरन एंड एर्डेलेन, 2006, पृ. 179
10. ↑ He's black, and he's back! Archived 2009-08-29 at the वेबैक मशीन Private enterprise saves southern Africa's rhino from extinction Archived 2009-08-29 at the वेबैक मशीन, द इंडिपेन्डेंट, 17 जून 2008



INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.423



ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 **9940 572 462**  **6381 907 438**  **ijirset@gmail.com**



www.ijirset.com

Scan to save the contact details